दिनांक 8 दिसम्बर, 2017 को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा "Start up Agrivation, 2017 Workshop" में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

मुझे बिरसा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology, Govt. of Jharkhand द्वारा आयोजित "Start up Workshop" में सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है। मुझे आज यहाँ उपस्थित युवाओं एवं budding start-up Entrepreneurs से असीम आशा है।

यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि आज हमारा देश पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है। हमारे देश की गतिविधियों को पूरी दुनिया गौर से देख रही है और इसे भविष्य की महाशक्ति के रूप में देखा जाने लगा है। हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा वैसे लोगों का है, जिनकी उम्र 30 वर्ष से कम है। हमारी यह ऊर्जावान युवाशक्ति पूरी दुनिया के लिए मानव संसाधन बैंक का काम कर सकती है। देश में Science, Technology और Industry का तेजी से हो रहे विकास से रोजगार के जहाँ नये अवसर बराबर सामने आ रहे हैं, वहीं अशिक्षा और बेरोजगारी की समस्यायें भी एक चुनौती के रूप में सामने है।

हमारा देश कृषि निर्भर अर्थव्यवस्था के रूप में जाना जाता है। हमारे 70% लोग गांवों में रहते हैं और कृषि उनका प्रमुख व्यवसाय है। बढ़ती आबादी के लिए खाद्यान्न उत्पादन भी एक

चुनौती है, जिससे निबटने के लिए हमारे कृषि वैज्ञानिक और किसान निरंतर प्रयासरत है। उनके निरंतर प्रयास से हमारे देश ने कृषि और सम्बद्ध क्षेत्रों में प्रगति की है।

झारखण्ड अनाज के मामले में आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है, यद्यपि इस दिशा में लगातार प्रगति हो रही है। हमारा राज्य पूर्वी भारत के वनस्पति कटोरे के रूप में जाना जाता है। झारखण्ड सब्जियों का एक बड़ा उत्पादक राज्य है। राज्य में कृषि की खेती के तहत कुल भौगोलिक क्षेत्र का 35% से अधिक हिस्सा है। राज्य में बागवानी उत्पादन बहुत जीवंत है। यह सब्जियों जैसे टमाटर, मटर, शिमला मिर्च और कटहल का प्रमुख उत्पादक है। बेर, बेल, शरीफा, पपीता, जामुन आदि फल यहाँ पर्याप्त मात्रा में होते हैं। जंगलों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध पलाश फूल से कई सामग्री बनायी जा सकती है। यह क्षेत्र सालों भर गुलाब उत्पादन के लिए अनुकूल है। कहा जाता है कि राँची में न्यूजीलैण्ड के बाद सबसे बड़े आकार का गुलाब होता है। उत्पादन क्षमता को देखते हुए, झारखंड में कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए संसाधन आधार प्रदान करने की क्षमता है ।

चूँकि राज्य में अधिकांश लघु एवं सीमान्त कृषक हैं, इसलिए उनकी जोत का आकार छोटा है। कम आमदनी के कारण वे खेती से विमुख नहीं हों, इसके लिए हमें समेकित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। इसके तहत किसानों को खेती के साथ-साथ गो पालन, बकरी पालन, सूकर पालन, कुक्कुट पालन एवं मत्स्य पालन के

लिए प्रोत्साहित करनी होगी ताकि उनकी आमदनी का नियमित और टिकाऊ स्रोत बना रहे।

सुखद है कि Start Up लहर कृषि क्षेत्र में अपनी पकड़ बना रहा है। ग्रामीण इलाकों में बढ़ती मोबाइल पहुंच और Internet access के साथ, Agriculture Sector में धीरे-धीरे हमारे पांव मजबूत हो रहे हैं। इस क्षेत्र के उत्थान की दिशा में काम करने वाले कई तरह के Start Up हैं और किसानों की मदद करने और अच्छी कमाई करने के लिए कुछ नवीन विचार तैयार किए गये हैं। आबादी में वृद्धि के साथ Agriculture Product को समृद्ध और बढ़ाने की जरूरत है। खेती की समृद्धि के लिए वैकल्पिक पद्धति जैसे Vertical farming इत्यादि पर और ध्यान देने की जरूरत है। इसके अलावा, Start Up के जरिये बिचौलियों के बिना E-Connect और Pool Connection से सीधे आपूर्तिकर्ताओं के लिए उचित बाजार उपलब्ध कराने पर बल मिला है। इस दिशा में नवाचार के लिए रोडमैप और समाज के समग्र विकास के लिए सभी प्रयासरत हैं।

इस अवसर पर यह भी कहना चाहूँगी कि किसानों के दु:ख-तकलीफ, जरूरतों और प्राथमिकताओं को मैं निकट से जानती हूँ। पहले कृषि हेतु इतने आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे। कृषि विश्वविद्यालय के शिक्षक हों, वैज्ञानिक हों या विद्यार्थी हों, उन्हें किसी न किसी प्रकार किसानों के लिए ही काम करना है। उन्हें अपने प्रयासों का मूल्यांकन केवल शोध पत्रों या तकनीकी बुकलेट-बुलेटिन के प्रकाशन अथवा प्रौद्योगिकी विकास से नहीं

करना है, बल्कि उन्हें देखना होगा कि उनके प्रयासों और अनुसंधान से किसानों का दु:ख-दर्द दूर हुआ या नहीं। कृषि वैज्ञानिकों के सारे प्रयासों का मुख्य उद्देश्य किसानों का जीवन-स्तर ऊँचा उठाना है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!